॥ अम्मा को पप्पा कहकर बुलायेंगे ॥

एम. नमिराज, एम. ए.

बच्चों से निश्चय ही घर का रौनक बढता है । बच्चे घर को नन्दन वन बना देते हैं । उसकी हँसी-खुशी बाल क्रीडाएँ घर में पुष्प बिछा देती है जिनकी खुशबू से सारा घर महक उठता है ।

कवियों का यह कथन सर्वथा सत्य है कि जिस घर में बच्चे नहीं रहते वहाँ हँसी-खुशी नहीं रहती, वहाँ हमेशा अंधकार बना रहता है ।

बच्चों के तर्क, बातचीत करने के ढंग, उनके प्रश्न, उनका रोना मचलना, किसी के प्रति प्रसन्नता एवं अप्रसन्नता व्यक्त करने के तरीके आदि सब निराले होते हैं । किसी भी परिस्थिति में भोले-भोले निर्दोष बालव्यवहार हमारे अशांत मन को स्वर्गीय आनन्द से उल्लसित कर देते हैं और सब कुछ भूल कर उस आनन्द सागर में डूब जाते हैं ।

जब पिछली बार मैं घर गया तब ऐसी ही एक घटना घटी जिसने मुझे और मेरी पत्नी को हँसाते हँसाते लोट पोटकर दिया था ।

शाम को चार बजे मेरी पत्नी मेरे लिए रसोई घर में चाय बना रही थी । मैं भी वहाँ बैठा बैठा वार्त्तालाप कर रहा था । इतने में हमारी तीन साल की बच्ची, पूर्णिमा उछलती कूदती हुई वहाँ आ गयी और अपनी माँ से खाने के लिए बिस्कट माँगने लगी । उसकी माँ ने कहा— बेटी, ज़रा ठहर जा, मैं पप्पा के लिए चाय, बना रही हूँ । जल्दी इसे उतार लेती हूँ, फिर तुझे बिस्कट देती हूँ । बच्ची न मानी, माँ ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, चाय छानने में लग गयी । बिस्कट न पाकर पूर्णिमा मचल उठी, वह फर्श पर लोटने लगी । यह देखकर मैं उठ खड़ा हुआ और अलमारी से डिब्बा उठाकर उसमें से दो बिस्कट निकाल कर उसके दोनों हाथों में पकडा दिये ।

एक दम खुश होकर वह मेरी गोद में आ गयी और कहने लगी—'पप्पा, अब हम अम्मा को अम्मा कहकर नहीं बुलायेंगे ।'

'फिर किस को अम्मा बुलायेंगी'—मैंने पूछा । हम तुम को अम्मा कहकर बुलायेंगे । उसने बडे भोलेपन से कहा । हँसी रोक कर मैंने बडी कठिनाई से पूछा तू पप्पा कहकर किसको बुलायेंगी । उसने अपनी माँ की ओर अप्रसन्नता भरी दृष्टि से घूरकर कहा हम इसे पप्पा कहकर बुलायेंगे । तुम अच्छे हो, यह अच्छी नहीं है । इसने हमें क्यों नहीं बिस्कट दिये, अब हम इसे अम्मा कहकर कभी नहीं बुलायेंगे, पप्पा कहकर ही बुलायेंगे । उसकी ये

अपने व्यक्तिप्रभाव से ही किया है यही आपके चित्रों का महत्व है । आपकी रचनायें स्वतंत्र और व्यक्तित्वपूर्ण हैं । आपके चित्रों का सबसे मुख्य गुण यह है कि वे भाव भंगिमा से पूर्ण है । भाव भंगी और सरलता के कारण आपके चित्र प्रशंसनीय हो गये हैं ।

बेसिर पैर की बातें सुनकर हम पति पत्नी एक दम हँसी में लोट पोट हो गये। चाय का कप पत्नी के हाथ से मेरे हाथ में आते आते बीच में ही फर्शपर गिरकर चकना चूर हो गया। लेकिन हम लोगों का ध्यान इस ओर नहीं था। हँसी के आवेश में चाय-पाय हम सब कुछ भूल गये। हँसते हँसते पेट में बल पड़ने लगे। पूर्णिमा बेचारी मामला क्या है न समझ कर कभी मेरे मुख पर कभी अपनी माँ के मुख पर देखने लगी। हम लोगों ने बारी बारी से उसे गोद में भरकर उसका मुँह चूम लिया तब तो वह ऐसी प्रसन्न हो गयी कि किलकरियाँ मारकर हँसने में उसने भी हम लोगों का साथ दिया। तीनों की निर्मल हँसी से सारा घर गूँज उठा।

॥ आगस्ट ९ ॥

श्री. कासरगोड़

दो सौ वर्ष तक अंग्रेज़ सरकार अपने हित के लिए भारत वासियों के जन्म सिद्ध अधिकारों को मटिया मेट करती रही । गाँधीजी को हिन्दुस्तान की आज़ादी के वास्ते कई वर्षों तक लड़ना पड़ा । पर उनकी लड़ाईयाँ तलवार और बन्दूकों के द्वारा नहीं होती थी शत्रु को मुहब्बत से जीतने का एक नया रास्ता उन्होंने दिखाया । अन्त में भारत को आज़ादी मिली । भारत स्वातन्त्र हो चुका । मगर हम नंगे भूखे ही रहे । पेट भर रोटी नहीं मिलती । हम लोगों की ये माँगें हमारी आर्थिक उन्नति पर निर्भर हैं ।

प्राचीन भारत दूसरे देश के नंगों को कपड़े और भूखों को खाना दिया करता था । आज हम वे ही भारतीय खुद नंगे भूखे हैं । हमें अपनी माँग पूरी करने के लिए दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है ।

अब हम लोग भिखारियों का सा जीवन व्यतीत करते हैं । भूख तथा बेकारी ने हमारी कचूमर निकाल दिया है । देश के कोने-कोने से बेकारी का शोर सुनाई दे रहा है ।

किसी देश की उन्नति उस देश के लोगों की पारस्परिक मित्रता और प्रेम पर निर्भर है । मगर भारत वर्ष के लोगों में जो फूट का रोग है वह बहुत पुराना है । पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट ने यहाँ मुसलमानी सत्ता की नींव डाली; मुसलमानों की आपसी शत्रुता ने अंग्रेज़ी शासन के लिए द्वार खोल दिया ।

वर्तमान भारत में भी सब जगह फूट का विष-वृक्ष फूलता फलता दिखाई दे रहा है । इस धरती के नमक खाकर हमारे कुछ भाई चौएन लाई का स्वागत करने के लिए तैयार होते हैं । इन्हें हम कभी नहीं भूल सकते । हम लोगों की इस तरह की कुरीतियाँ आर्थिक, सामाजिक और मानसिक प्रगति म बाधक हैं । पारस्परिक मित्रता प्रेम और एकता देश की उन्नति के लिए सदा अनिवार्य है । राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद अब हमारे सामने भारत को आर्थिक और समाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का कर्तव्य उपस्थित हुआ है । यह काम तब तक सिद्ध न होगा जब तक हमारा देश नहीं सुधरेगा ।

हिन्दुस्तान ग्रामों का एक देश है । गाँवों की उन्नति ही देश की प्रगति है । गाँधीजी ने एक बार कहा था "मैं दरिद्र नारायण के दर्शन के लिए बदरीनाथ जा रहा हूँ ।" यह कहने में आप लोगों को आश्चर्य होगा कि गाँधीजी के दरिद्र नारायण भारत के नंगे भूखे गरीब थे और बदरीनाथ ग्राम ।

हम जानते हैं कि भारत एक प्रजासत्तात्मक राष्ट्र है । मगर इस तत्व को केवल अपने स्वार्थ के लिए बलि देने में क्या न्याय है ।

उदाहरण के लिए पिछले वर्ष के केन्द्र सरकार के मज़दूरों की हड़ताल को ले लें । वे लोग समझते हैं कि रेल और तार के बन्द होने से सरकार की नानी मर जाएगी । लेकिन वे भूल जाते हैं कि रेल और तार हम लोगों का है, सरकार का नहीं ।

अगस्त की नौवीं तारीख नौज़वानों का दिन है। इस दिन को बडी धूम धाम से मनाने से कोई लाभ नहीं। हमको महसूस करना चाहिए कि अपने देश को स्वावलंबी और स्वयं संपूर्ण बनाने की शक्ति हम नौज़वानों में हैं। इस शुभ दिन में हम सबको यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम सदा देश की उन्नति के लिए अथक काम करेंगे।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि कहने से कुछ भी न होगा। असली बात करने में है इसलिए! नौज़वानो! याद रखिए कि पहले करना और पीछे कहना चाहिए। तभी लोगों पर उसका असर पडेगा।

॥ जय भारत माता ॥

॥ चाँदनी रात में ॥

पी. कुंजीमुहम्मद, I बी. एस-सी.

चमकता चन्द्रमा मुक्ताम्बर में,
नयन मोहित करता तू हक़ीकत में ।
तू है क्या इस दुनिया का राजा—
हमको मोहित करने आया है ?
शोभा देख-देख सब तेरी—
ऊँगली दबा लेते दाँतों नीचे ।
गुण गान करने योग्य है तू ;
डर नहीं लगता तुझको तो—
एकान्त में, क्लान्त निश्चल में यथा
वहाँ मुग्ध-सा दिखलाता सदा ॥
छवि तेरी झलमल ओ जल में कल
हरियाली डूब गयी चाँदनी में ।
जानता नहीं अँधेरा कहाँ गया,
गुफ़ाओं, पेड तले नीचे छिपता है ।
तेरे मन में भी कलंक है
जो बढ़ाती तेरी छाया है ।
निरख-निरख तुझे जलन
उठती हैं मेरे मन में भी ।
इतना सौन्दर्य कहाँ से मिला
क्या खुदा भी है तेरे कब्ज़े में ?
चाहते हैं हम तुझ से मिलने को ।
लेकिन बलहीन हैं पास आने को
प्रशोभित कर रोज़ रोज़
मोहित कर मन भर-भर के ॥

॥ फूल और काँटा ॥

कुंजी मोहम्मद

देखो! उस सड़क के पास एक स्कूल दिखाई देती है न?

दुनिया के लिए स्कूल अच्छे लोगों को जन्म देती है और अच्छाई का प्रदर्शन भी करती है इस प्रकार "स्कूल" नाम से प्रशोभित होता था यह मकान भी।

इसका मानेजर था बालगोपाल और मुख्य अध्यापक भी। एक मोटा आदमी—एक तोंद वाला। आत्माराम इस स्कूल का एक अध्यापक था। विद्यार्थियों का प्यारा, सभी लोगों का स्नेह पात्र—लेकिन हमारे मैनेजर की आँखों में वह खटकता था। इसका कारण क्या था? 'स्कूल के दिन' चार बजे के बाद स्कूल में अध्यापकों की पंचायत बैठती थी। जिसमें मैनेजर को डींग मारने का अवकाश मिल जाता था। आत्माराम उस सभा में भाग न लेता था। क्योंकि उनका विचार यह था कि यहाँ बैठकर बडी बडी बातें करने से क्या फ़ायदा। घर में जाकर कुछ उपयुक्त काम करना अच्छा है।

काल का पहिया घूम रहा था। सूरज एक राजा की गंभीरता से निकल आया करता था और अपना सारा काम पूरा करके पश्चिम सागर में नहाने जाया करता था।

तब करीब आठ बजे होंगे। पेडों की हरियाली सूर्य किरणों के आलिंगन से खूब चमककर नयनानन्दकारी हो गयी। सब लोग नींद से मुक्त होकर अपने अपने कामों में लगे थे। उस समय प्रकृति शोभा का रसास्वादन करके आत्माराम घूमता था। उसने आगे नज़र डाली। मानेजर उधर से आ रहा था।

आत्माराम बोला, "गुडमोरनिंघ सर"। मानेजर "गुडमोरनिंग" के बाद एक दम लेकर फिर बोला, "दर्जे में तुम्हारा बर्ताव बहुत बुरा है और कभी-कभी एक निगोडे की तरह तुम बर्ताव करते हो। इसके अलावा तुम पंचायत में क्यों नहीं आते!" आत्माराम—"सर मेरे लिए घर में बहुत काम हैं। वहाँ बैठकर गप्पें मारने से क्या फ़ायदा?"

यह कड़वा और तेज़-तीखा जवाब मैनेजर के मन में लग गया।

अधिकार की गंभीरता ने औदार्य शील और सच्चाई के आगे सिर झुकाया।

दिन बीत गये। एक दिन मानेजर आकर उसके दर्जे के एक लड़के के कान में कुछ बोला।

जब पूरी बात आत्माराम की समझ में आयी तब वह चकित हो गया। क्योंकि उसने उस लड़के को अपने बच्चे के लिए खिलौना लाने को भेजा था।

दूसरे दिन आत्माराम स्कूल से एक मित्र से मिलने के लिए सड़क पर गया। पाँच मिनुट के बाद वापस आया। उसी समय मानेजर के मन में क्रोध बड़े ज़ोर से जलने लगा था। उसने धिक्कार से पूछा "अब तो, बाहर या शोप्पिंग जाने का समय नहीं।"

मनुष्य मनुष्य को भूल जाता है। आत्माराम कुछ न बोला। ऐसे मूर्ख लोगों के सामने चुप रहना

अच्छा है। फिर भी उसके मन में गूँज रहा था। 'मैं ने तुम्हारी तरह पराये लड़कों को अपने स्वार्थ साधन के लिए नहीं भेजा।'

इसी बीच में उस पाठशाला में एक अध्यापक की ज़रूरत हुई।

अमरनाथ उस गाँव का एक निवासी था। उस गरीब आदमी की इकलौती बेटी थी रज़िया। वह अपनी पढ़ाई पूरी करके घर पर बैठती थी। अपनी बेटी को अध्यापक के "पोस्ट" में नियुक्त कराने के लिए वह मानेजर से मिलने गया।

सबेरे का समय था। करीब नौ बजे को वह स्कूल गया। तब सिर्फ मानेजर आत्माराम और कुछ लड़के हाज़िर थे।

अमरनाथ ने दफ़्तर में प्रवेश किया। हाथ में एक लकड़ी थी। कमर झुककर कमान हो गयी थी। एक-एक पग चलना दूभर था। पोपला मुँह, सन के जैसे बाल! मानेजर—बैठो। क्या खबर?

"सर मेरी बेटी को उस पोस्ट में....."

"वह तक्लीफ़ की बात है"

"सर, हमारी आर्थिक दशा का ख्याल....."

ज़रा सोचकर मानेजर बोला "पाँच सौ रूपया दो तो....."

अमरनाथ चौंक गया। पाँच सौ रूपये! खुदा की दुनियाँ में चलनेवाले नाटकों में एक.....वह यह सुनकर आवाक रह गया। इसका मतलब क्या है? सिर्फ लालच! खुन की प्यास! अमरनाथ निराशा से घर लौटा। वहाँ प्रतीक्षा भरी आँखों से एक युवती बैठी थी।

हर एक क्षण दुःख मय था। दोनों गले मिले।

दोनों की आँखें स्नेह की वर्षा करने लगीं।

दोनों के हृदय गद्गद हो गये।

अमरनाथ ने अपने दोनों हाथ फैला दिये। लेकिन कोई आगे नहीं बढा।

मुरझाई लता को फिर हरी भरी करने के लिए कोई आगे नहीं बढा।

आखिर अमरनाथ अपनी चार कदम ज़मीन बेचने को मज़बूर हो गया। मानेजर का लोभ-भूख मिटाने के लिए, अपनी एक मात्र बेटी के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए—

दस दिन बीत गये होंगे। अमरनाथ फिर आया; खाली हाथ नहीं।

पाँच सौ रूपये काँपते हाथ से मेज़ पर रख दिये और दो अमूल्य आँसू के मोती भी।

मानेजर के मुँह में प्रसन्नता आ गयी। मन में खुशी की लता लहलहाने लगी।

लेकिन आत्माराम यह सह न सका। आँसू भरी आँखों से बाहर की तरफ़ देखने लगा। आमकी डालियों के झूले पर झूलती हुई कोयल कूक उठी—"रिश्वत खोरी बन्द करो।"

दूर पर सूरज यह दृश्य देख न सका। इस लिए बादल रूपी पलक से आँखें बन्द कर दी।

आत्माराम का कलेजा टूट गया। उसने चिल्ला कर कहा—"मानेजर यह रूपये नहीं। सिर्फ गरीबों के खून है, गरीबों के खुन! क्या रूपये के लिए इनसानियत बेचते हो?"

उसने सोचा यहाँ रहना अपने लिए कठिन होगा।

इस पाप-कुण्ड से मुक्ति मिलने के लिए अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दिया। जाते समय उसने मानेजर की ओर देखा और उसकी आँखों से दो अमूल्य अश्रु-कण नीचे गिर पड़े जो मानेजर के मन का मैल धुलाने को अपर्याप्त थे।

॥ गुरुदेव की चित्रकारी ॥

पी. मोहनदास, II बी. एस-सी.

रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी को हम महाकवि, लेखक, कहानीकार, नाटककार और भारतीय संस्कृति के प्रवाचक आदि विविधरूप में जानते हैं । परन्तु चित्रकार के रूप में उन्हें बहुत कम लोगों ने जाना होगा । उनकी जन्म शताब्दी के इस मौके में भी उनकी चित्रकला के बारे में बहुत कम चर्चायें होती हैं ।

इसका कारण यह नहीं कि उनकी चित्रकला महत्वपूर्ण नहीं है । परन्तु यह है कि, कविता, नाटक आदि में आपका जो स्थान है वह चित्रकार के स्थान से कई गुना ऊँचा है । महात्मा गाँधी एक महान साहित्यकार हैं । परन्तु उनका चरित्र और राज्यतन्त्रज्ञता उनके साहित्य से कहीं ऊँचा है । इसी से हम उन्हें साहित्यकार की अपेक्षा महान राज्यतंत्रज्ञ और आदर्श पुरुष के रूपमें देखते हैं । रवीन्द्रनाथ के बारे में भी यही बात है । चित्रकला से बढ़कर आपकी कविता नाटक और कहानी बहुत सुन्दर है ।

चित्रकला में आपकी परंपरागत वासना थी । आपके भाई अवनीन्द्रनाथ ठाकुर और गज्जनीन्द्रनाथ ठाकुर आधुनिक चित्रकला के महान शिल्पी हैं । आज चित्रकला में "आधुनिक चित्रकला" (Modern Art) की जो प्रवणता है उसमें ठाकुर भाईयों की अनमोल देन हैं । चित्रकला में रवीन्द्रनाथ को विशेष रूप से शिक्षा नहीं मिली थी । भाई लोग चित्रकार होने से चित्रकला के मौलिक तत्व सीख सके । इस से अपनी सहज भावना और सौंदर्य बोध को मिलाकर वे स्वतंत्रता से चित्र बनाने लगे । सारी सुन्दर कलाओं से गुरुदेव तन्मय हो चुके थे । फिर कला के एक अंग मात्र चित्रकला उनसे कैसे बच सकती ।

रवीन्द्र के चित्र भावनापूर्ण हैं । कविता और दूसरे साहित्य रचनाओं की तरह चित्रों में भी आपका "व्यक्तित्व" है । आपके 'वह' (She) नामक चित्र मुझे सुन्दर लगा । 'सुन्दरता' चित्रका बाह्य सौंदर्य नहीं । बाह्य से चित्र बिलकुल सुन्दर नहीं लगता । वह एक औरत का चित्र है जो आधुनिक शैली के अनुसार बना हुआ हैं । प्रथम दृष्टि में उसकी आँखें काफी सुन्दर नहीं और नाक कुछ अधिक लंबा है । मामूली लोगों को उसकी मूरत मनोज्ञ नहीं लगेगी । परंतु ध्यान लगाकर देखने से मालूम होता हैं कि उसकी आँखें काव्यात्मक हैं । आधुनिक कला के बारे में कुछ जानते तो समझ सकते हैं कि यह चित्र भाव भंगी पर निर्भर है ।

रवीन्द्रनाथ के चित्रों का ही नहीं आज के कई मशहूर कलाकारों के चित्रों का आस्वाद लेने के लिए भी 'केवल कला' के बारे में कुछ जानना चाहिये । केवल कला में भाव का मुख्य स्थान हैं । रंग, रेखा, आकार और सब भाव भरने के लिये खास उपाधियाँ हैं। यह नहीं कह सकते कि चित्रकला में रवीन्द्रनाथ का स्थान अद्वितीय हैं। पर इस क्षेत्र में उन्होंने जो कुछ किया है वह